•प्रार्थना...

बुद्ध पूर्णिमा का महत्व...

वैशाख पूर्णिमा को ही भगवान विष्णु ने अपने नौवें अवतार भगवान बुद्ध के रूप में जन्म लिया। बौद्ध अनुयायी इस पर्व पर को मनाने के लिए बोधगया आते हैं और प्रार्थना करते हैं। इस दिन बोधिवृक्ष की पूजा की जाती है। उसकी शाखाओं पर हार व रंगीन पताकाएं सजाई जाती हैं। जड़ों में दूध व सुगंधित पानी डाला जाता है और वृक्ष के आसपास दीपक जलाए जाते हैं। पक्षियों को पिंजरे से मुक्त कर खुले आकाश में छोड़ा जाता है और गरीबों को भोजन व वस्त्र दान दिए जाते हैं। इस दिन पितरों का तर्पण करने से बहुत पुण्य की प्राप्ति होती है। बुद्ध पूर्णिमा के दिन पर, बौद्ध लोग खीर खाते है जो चावल दूध और चीनी में पकाया जाता है और गरीब लोगों को वितरित भी किया जाता है।

वैशाखी पूर्णिमा बड़ी ही पवित्र तिथि है। दान पुण्य और धर्म कर्म के अनेक कार्य इस दिन किये जाते हैं। वैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध पूर्णिमा भी मनायी जाती है। बुद्ध पूर्णिमा या बैसाख पूर्णिमा के दिन व्रत का बड़ा ही फलदायी महत्व माना गया है। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा अपनी पूर्ण कलाओं से युक्त होता है और इस दिन चंद्रमा की किरणों में बहुत अधिक एनर्जी

होती है, जो व्यक्ति के मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है। साथ ही इस दिन गौतम बुद्ध के जीवन पर उपदेश, समूह ध्यान, बौद्ध धर्म ग्रंथों, धार्मिक प्रवचन, जुलूस, बुद्ध की मूर्ति की पूजा की निरंतर सस्वर पाठ होता है। इस पूर्णिमा के दिन किए गए अच्छे कार्यों से पुण्य की प्राप्ति होती है। माना जाता है कि इस दिन महात्मा बुद्ध गृहत्याग के पश्चात सात वर्षों तक वन में भटकते रहे। यहां पर उन्होंने कठोर तप किया और अंतत: वैशाख पूर्णिमा के दिन बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें बुद्धत्व ज्ञान की प्राप्ति हुई। तभी से यह दिन बुद्ध पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है।
वर्तमान में पूरी दुनिया में लगभग 180 करोड़ लोग भगवान बुद्ध के अनुयायी हैं। भारत के बिहार राज्य में स्थित बोधगया और कुशीनगर पवित्र धार्मिक स्थल है।

•बुद्ध जयंती...

भगवान बुद्ध...

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष में मनाई जाने वाली पूर्णिमा तिथि जिसे बुद्ध पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। बुध पूर्णिमा का संबंध गौतम बुद्ध के साथ जोडा है। इस दिन गौतम बुद्ध जयंती भी मनाई जाती है। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा अपनी पूर्ण कलाओं से युक्त होता है और इस दिन चंद्रमा की किरणों में बहुत अधिक एनर्जी होती है, जो व्यक्ति के मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है। इसका एक कारण यह भी है, क्योंकि चंद्रमा को मन का कारण माना जाता है। कहा जाता है कि यदि व्यक्ति की कुंडली में चंद्रमा खराब है तो उसके मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार उत्तर भारत में बुद्ध को विष्णुजी का नौवा अवतार माना जाता है। इस दिन स्नान और दान दोनों का विशेष महत्व होता है

गौतम बुद्ध का जन्म ईसा से 563 साल पहले नेपाल के लुम्बिनी वन में हुआ। उनकी माता कपिलवस्तु की महारानी महामाया देवी जब अपने नैहर देवदह जा रही थीं, तो उन्होंने रास्ते में लुम्बिनी वन में बुद्ध को जन्म दिया। कपिलवस्तु और देवदह के बीच नौतनवा स्टेशन से 8 मील दूर पश्चिम में रुक्मिनदेई नामक स्थान के पास उस काल में लुम्बिनी वन हुआ करता था। उनका जन्म नाम सिद्धार्थ रखा गया। सिद्धार्थ के पिता शुद्धोदन कपिलवस्तु के राजा थे और उनका सम्मान नेपाल ही नहीं समूचे भारत में था। सिद्धार्थ की मौसी गौतमी ने उनका लालन-पालन किया क्योंकि सिद्धार्थ के जन्म के सात दिन बाद ही उनकी मां का देहांत हो गया था।

वैसे तो सिद्धार्थ ने कई विद्वानों को अपना गुरु बनाया किंतु गुरु विश्वामित्र के पास उन्होंने वेद और उपनिषद् पढ़े, साथ ही राजकाज और युद्ध-विद्या की भी शिक्षा ली। कुश्ती, घुड़दौड़, तीर-कमान, रथ हांकने में कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता था।

शाक्य वंश में जन्मे सिद्धार्थ का सोलह वर्ष की उम्र में दंडपाणि शाक्य की कन्या यशोधरा के साथ विवाह हुआ। यशोधरा से उनको एक पुत्र मिला जिसका नाम राहुल रखा गया। बाद में यशोधरा और राहुल दोनों बुद्ध के भिक्षु हो गए थे।

बुद्ध के जन्म के बाद एक भविष्यवक्ता ने राजा शुद्धोदन से कहा था कि यह बालक चक्रवर्ती सम्राट बनेगा, लेकिन यदि वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया तो इसे बुद्ध होने से कोई नहीं

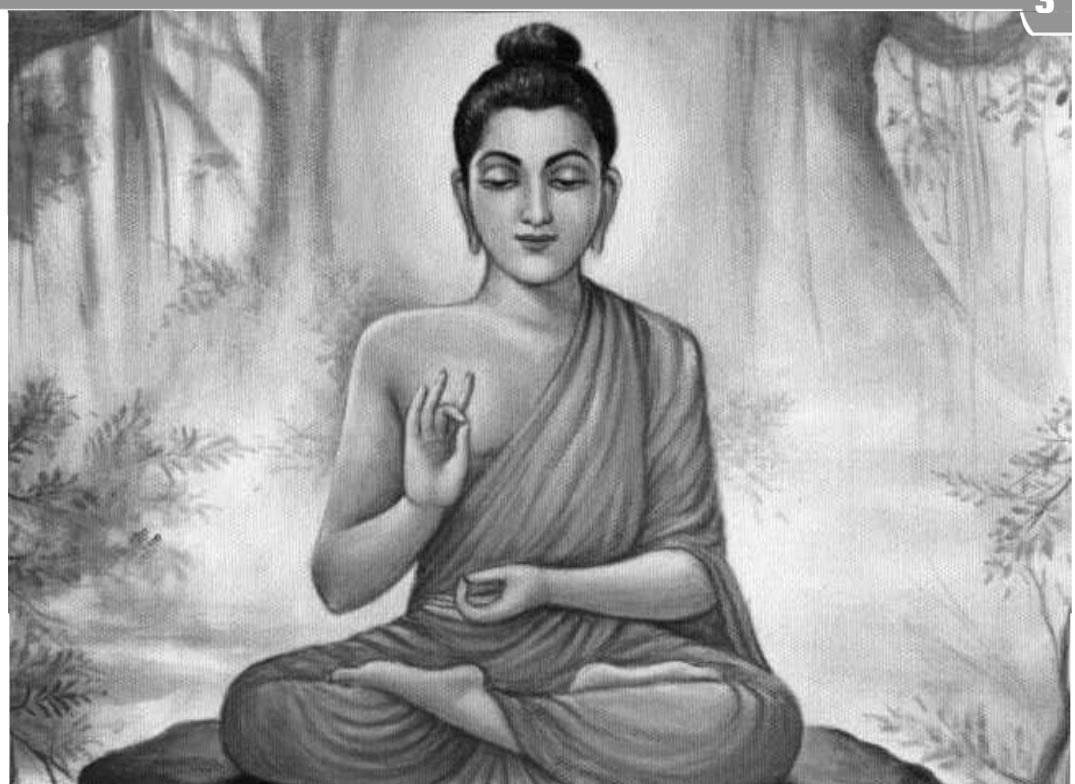

मन में वैराग्य भाव तो था ही, इसके अलावा क्षत्रिय शाक्य संघ से वैचारिक मतभेद के चलते संघ ने उनके समक्ष दो प्रस्ताव रखे थे।

वह यह कि फांसी चाहते हो या कि देश छोड़कर जाना। सिद्धार्थ ने कहा कि जो आप दंड देना चाहें। शाक्यों के सेनापति ने सोचा कि दोनों ही स्थिति में कौशल नरेश को सिद्धार्थ से हुए विवाद का पता चल जाएगा और हमें दंड भुगतना होगा...

रोक सकता और इसकी ख्याति समूचे संसार में अनंतकाल तक कायम रहेगी।

राजा शुद्धोदन सिद्धार्थ को चक्रवर्ती सम्राट बनते देखना चाहते थे इसीलिए उन्होंने सिद्धार्थ के आस-पास भोग-विलास का भरपूर प्रबंध कर दिया ताकि किसी भी प्रकार से वैराग्य उत्पन्न न हो। तीन ऋतुओं के लायक तीन सुंदर महल बनवा दिए। वहां पर नाच-गाना और मनोरंजन की सारी सामग्री जुटा दी गई। दास-दासी उनकी सेवा में रख दिए गए, लेकिन...एक दिन वसंत ऋतु में सिद्धार्थ बगीचे की सैर करने निकले। रास्ते में सांसारिक दु:ख देखकर विचलन हुआ और सब कुछ बदल गया।

मन में वैराग्य भाव तो था ही, इसके अलावा क्षत्रिय शाक्य संघ से वैचारिक मतभेद के चलते संघ ने उनके समक्ष दो प्रस्ताव रखे थे। वह यह कि फांसी चाहते हो या कि देश छोड़कर जाना। सिद्धार्थ ने कहा कि जो आप दंड देना चाहें। शाक्यों के सेनापति ने सोचा कि दोनों ही स्थिति में कौशल नरेश को सिद्धार्थ से हुए विवाद का पता चल जाएगा और हमें दंड भुगतना होगा तब सिद्धार्थ ने कहा कि आप निश्चिंत रहें, मैं संन्यास लेकिन चुपचाप ही देश से दूर चला जाऊंगा। आपकी इच्छा भी पूरी होगी और मेरी भी।

तब आधी रात को सिद्धार्थ ने अपनी पत्नी यशोधरा और बेटे राहुल को देखा जो सो रहे थे। दोनों के मस्तक पर हाथ रखा और फिर धीरे से किवाड़ खोलकर महल से बाहर निकले और घोड़े पर सवार हो गए। रातोरात वे 30 योजन दूर गोरखपुर के पास अमोना नदी के तट पर जा पहुंचे। वहां उन्होंने अपने राजसी वस्त्र उतारे और केश काटकर खुद को संन्यस्त कर दिया। उस वक्त उनकी आयु थी 29 वर्ष।

जंगल-जंगल और नगर-नगर सिद्धार्थ भिक्षाटन करते और जब जो साधु या सिद्ध मिल जाता उससे योग साधना या ध्यान विधियां सीखकर कठोर तप करते। तप के दौरान वे एक वक्त सिर्फ तिल और चावल ही ग्रहण करते। फिर उन्होंने कठिन उपवास भी किए लेकिन फिर भी उससे उन्हें कोई शांति नहीं मिली।

लेकिन एक दिन वे ध्यान में बैठे थे तभी कुछ स्त्रियां वहां से गाती हुई नगर की और लौट रही थीं। सिद्धार्थ ने उनका गीत सुना- वीणा के तार को ढीला मत छोड़ो। ढीला छोड़ देने से उनका सुरीला स्वर नहीं निकलेगा। पर तारों को इतना कसो भी मत कि वे टूट जाएं। सिद्धार्थ को यह बात जंच गई और यह समझ में आ गया कि किसी भी प्राप्ति के लिए मध्यम मार्ग ही श्रेष्ठ होता है।

बोधी प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ गौतम बुद्ध कहलाने लगे। ज्ञान उपलब्ध होने के बाद वे सारनाथ पहुंचे। वहीं पर उन्होंने लोगों को मध्यम मार्ग अपनाने के लिए कहा। दु:ख के कारण बताए और दु:ख से छुटकारा पाने के लिए आष्टांगिक मार्ग बताया। तरह-तरह के देवता, यज्ञ, पशुबलि और व्यर्थ के पूजा-पाठ की निंदा की। अहिंसा पर जोर दिया।

80 वर्ष की उम्र तक गौतम बुद्ध ने जीवन और धर्म के प्रत्येक पहलू पर प्रवचन दिए और लोगों को दीक्षा देकर बुद्ध शिक्षा के लिए प्रचार पर भेजा। सुद्धोधन और राहुल ने भी उनसे दीक्षा ली।

•जीवन में...

प्रेम ही बढ़ेगा...

वास्तु में कुछ आसान से उपाय बताए गए हैं जो हमारे जीवन में नई खुशियां भर सकते हैं। आइए जानते हैं इनके बारे में। घर की साज सज्जा में गुलाबी रंग का प्रयोग करें। गुलाबी रंग प्रेम का भाव उत्पन्न करता है। भगवान विष्णु को हल्दी की गांठ समर्पित करें, इससे दांपत्य जीवन में मधुरता आती है। गुलाब के फूल को प्रेम का प्रतीक माना जाता है। इस फूल को शुक्रवार के दिन भगवान विष्णु मां लक्ष्मी को समर्पित करें। गेंदे के फूल पर रोजाना कुमकुम लगाकर इसे तुलसी पर अर्पण करें। ऐसा करने से भी अपनों के बीच मधुरता बनी रहती है। पति–पत्नी के बीच प्रेम संबंध हमेशा ताजगी से भरपूर रहें इसके लिए बेडरूम में राधा कृष्ण की ऐसी छवि लगाएं जिसमें श्रीकृष्ण बांसुरी बजाते हुए हों। शयनकक्ष में नाचते हुए मोर–मोरनी का चित्र भी लगा सकते हैं। जीवनसाथी को जो बात पसंद न हो, वह बात रात में न करें। कमरे में शंख या सीपी अवश्य रखें। गुरुवार को केले या पीपल के पेड़ पर पति–पत्नी एक साथ जल चढ़ाएं। संतरा और लीची प्रेम बढ़ाने वाले फल माने जाते हैं। इन फलों का सेवन करने से प्रेम संबंधों में नई ताजगी आती है।

•तुलसी का पौधा...

घर में तुलसी का पौधा अवश्य लगाएं। यह घर में मौजूद हवा को शुद्ध करता है। कैक्टस, बोन्साई और अन्य दूधिया पौधों को घर में लगाने से बचें। घर की उत्तर–दिशा में रोजाना एक दीपक अवश्य जलाएं। यह परिवार के स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। घर में अगर कोई नल लगातार टपकता है तो यह भी स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। इसे तुरंत ही ठीक कराएं। अगर घर में कोई रोगी सदस्य लंबे वक्त से एक ही कमरे में रह रहा हो तो सबसे पहले तो उसका कमरा बदलें। ऐसे कमरे में रखें, जहां धूप और हवा बराबर आए।